https://shikshabodh.in/

SHIKSHA BODH
(The Journal of Education and Humanities)
ISSN: 3139-5880 IMPACT FACTOR: 6.50
VOLUME-1|ISSUE-3|July-September, 2026

21वीं सदी में टैगोर के शैक्षणिक विचारों की प्रासंगिकता

पंकज कुमार सिंह
शोधार्थी, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

सारांश (Abstract)

रवींद्रनाथ टैगोर का शैक्षणिक दर्शन आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करता है। आज की 21वीं सदी में, जहाँ शिक्षा प्रणाली तेजी से व्यावसायिक, डिजिटल और तनावग्रस्त होती जा रही है, टैगोर का प्राकृतिक, स्वतंत्रता-आधारित और सर्वांगीण विकास का सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में टैगोर के शैक्षणिक विचारों—जैसे प्रकृति के सामीप्य में शिक्षा, बाल-केंद्रित दृष्टिकोण, कला एवं रचनात्मकता का समावेश तथा विश्व-बंधुत्व की भावना—का आधुनिक शिक्षा प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। टैगोर की शिक्षा पद्धति केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास के संतुलन पर बल दिया।

मूल शब्द (Keywords): *रवींद्रनाथ टैगोर, शैक्षणिक दर्शन, 21वीं सदी की शिक्षा, शांतिनिकेतन, सर्वांगीण विकास, प्रकृतिवादी शिक्षा, अनुभवजन्य अधिगम।*

1. प्रस्तावना (Introduction)

रवींद्रनाथ टैगोर केवल एक महान कवि, साहित्यकार और नोबेल पुरस्कार विजेता ही नहीं थे, बल्कि वे एक अद्वितीय शिक्षाविद और दार्शनिक भी थे। उनका मानना था कि शिक्षा केवल किताबों और औपचारिक कक्षाओं तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य छात्र के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना और उसे प्रकृति तथा समाज के साथ पूर्ण सामंजस्य में जोड़ना है। 21वीं सदी के तीव्र गति वाले तकनीकी युग में जहाँ छात्र अत्यधिक मानसिक तनाव, कठोर प्रतिस्पर्धा और केवल अंक प्राप्त करने की अंधी दौड़ से जूझ रहे हैं, वहाँ टैगोर के विचार एक सहज, मानवीय और अत्यंत प्रभावी विकल्प प्रस्तुत करते हैं।

टैगोर ने अपने समय की तत्कालीन औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली की कड़े शब्दों में आलोचना की थी। उनका स्पष्ट मानना था कि वह प्रणाली बालकों की स्वाभाविक रचनात्मकता, मौलिक चिंतन और प्राकृतिक जिज्ञासा को कुचलने का काम करती थी। उनके अनुसार, पारंपरिक बंद कक्षाएं बालकों के स्वाभाविक विकास के मार्ग में "पिंजरे" के समान थीं जो उनकी अंतर्निहित कल्पनाशीलता और स्वतंत्र सोच को बाधित करती थीं। इसके समाधान स्वरूप उन्होंने 'शांतिनिकेतन' तथा 'विश्व-भारती' की स्थापना की, जो प्रकृति के खुले प्रांगण में प्राकृतिक, आनंदमयी और व्यावहारिक शिक्षण का एक अभूतपूर्व एवं विश्वस्तरीय उदाहरण बनी।

टैगोर के शैक्षणिक दर्शन का मूल मंत्र यह है कि शिक्षा मनुष्य को केवल आजीविका कमाने या परीक्षा उत्तीर्ण करने के योग्य ही न बनाए, बल्कि वह आत्म-साक्षात्कार, चरित्र निर्माण, सौंदर्यबोध और मानवीय संवेदनाओं का भी संवर्धन करे। उनके अनुसार, वास्तविक शिक्षा वही है जो मनुष्य को प्रकृति और उसके समस्त परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम बनाती है। वर्तमान काल में, जब शिक्षा का तेजी से बाजारीकरण और व्यवसायीकरण हो रहा है तथा विद्यार्थी यंत्रवत और एकाकी होते जा रहे हैं, तब टैगोर की जीवन-उन्मुख, मानव-केंद्रित और प्रकृतिवादी शिक्षा का गहन पुनर्मूल्यांकन करना अत्यंत प्रासंगिक और समय की मांग बन चुका है।

2. मुख्य विषय-वस्तु (Main Content)

टैगोर के शैक्षिक दर्शन की मुख्य विषय-वस्तु बालक के संपूर्ण, स्वतंत्र और स्वाभाविक विकास पर केंद्रित है। इसे निम्नलिखित प्रमुख स्तंभों और दार्शनिक सिद्धांतों के माध्यम से विस्तार से समझा जा सकता है:

- **प्रकृति के सामीप्य में शिक्षा:** टैगोर के अनुसार, बच्चे बंद कमरों की निर्जीव चारदीवारी की बजाय खुले प्राकृतिक वातावरण में अधिक सहजता और गहराई से सीखते हैं। शांतिनिकेतन की स्थापना इसी सोच का जीवंत प्रतिरूप थी। उनका दृढ़ विश्वास था कि प्रकृति स्वयं में सबसे बड़ी और सर्वोत्कृष्ट शिक्षिका है, जो मनुष्य के भीतर संवेदनशीलता, सौंदर्यबोध और असीम आनंद की अनुभूति जगाती है।
- **स्वतंत्रता और रचनात्मकता:** टैगोर कठोर, बाहरी और थोपे गए अनुशासन के सख्त खिलाफ थे। उनका मानना था कि वास्तविक अनुशासन बाहरी भय या दंड से नहीं, बल्कि आंतरिक बोध और स्व-नियंत्रण से उत्पन्न होना चाहिए। बालक को अपनी रुचि के अनुसार सीखने, निसंकोच प्रश्न पूछने और अपनी आत्म-अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।
- **कला, संगीत और हस्तशिल्प का समावेश:** शिक्षा केवल बौद्धिक और तार्किक विकास तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उसमें हृदय, आत्मा, संवेदना और भावनाओं का विकास भी अनिवार्य रूप से शामिल होना चाहिए। इसीलिए उन्होंने नृत्य, संगीत, चित्रकला, नाटक, वास्तुकला और शिल्प कला को पाठ्यक्रम का अभिन्न और अनिवार्य अंग बनाया।
- **अंतरराष्ट्रीयता और विश्व-बंधुत्व:** टैगोर ने संकीर्ण राष्ट्रवाद और संकुचित विचारधाराओं की सीमाओं से परे जाकर वैश्विक नागरिकता और सार्वभौमिक मानववाद की शिक्षा पर विशेष बल दिया। उनकी विश्वविख्यात संस्था 'विश्व-भारती' का ध्येय वाक्य था "यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्" (अर्थात् जहाँ पूरा विश्व एक नीड़/घोंसला बन जाता है)।
- **मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा:** टैगोर का मानना था कि बालक का स्वाभाविक, मौलिक और मानसिक विकास उसकी अपनी मातृभाषा में ही सबसे सहज रूप से हो सकता है। किसी विदेशी भाषा को प्राथमिक माध्यम के रूप में थोपे जाने से बालक की स्वाभाविक विचार प्रक्रिया और मौलिकता बाधित होती है।
- **शारीरिक स्वास्थ्य और खेलकूद:** टैगोर ने केवल किताबी ज्ञान पर जोर न देकर शारीरिक बल, खेलकूद, बागवानी और हस्तशिल्प को समान महत्त्व दिया। उनका मानना था कि एक स्वस्थ और सक्रिय शरीर में ही स्वस्थ एवं रचनात्मक मस्तिष्क का निवास संभव है।

3. 21वीं सदी की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता

आज की 21वीं सदी की आधुनिक, अत्यधिक तकनीकी और डिजिटल शिक्षा प्रणाली में टैगोर के विचारों की प्रासंगिकता निम्नलिखित महत्वपूर्ण पहलुओं में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है:

- **मानसिक तनाव से मुक्ति और मानसिक स्वास्थ्य:** आधुनिक अंधी प्रतियोगिता, अंक-केंद्रित परीक्षाओं, भारी बस्ते के बोझ और अत्यधिक स्क्रीन टाइम के इस दौर में टैगोर की 'आनंदमयी शिक्षा' की अवधारणा विद्यार्थियों के मानसिक तनाव को दूर कर उनके मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में अत्यंत सहायक है।
- **अनुभवजन्य अधिगम (Experiential Learning) एवं NEP 2020:** भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में रटंत विद्या की पुरानी परिपाटी को समाप्त कर व्यावहारिक, गतिविधि-आधारित, योग्यता-आधारित व रचनात्मक शिक्षण पर विशेष जोर दिया गया है। यह नया ढांचा पूरी तरह टैगोर के शैक्षिक दर्शन और शांतिनिकेतन के व्यावहारिक मॉडल से प्रेरित और मेल खाता है।

- **पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता व सतत् विकास:** वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर मंडरा रहे जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरणीय संकट को देखते हुए, टैगोर का प्रकृति-प्रेमी शैक्षिक मॉडल विद्यार्थियों के भीतर प्रकृति के प्रति आदर, प्रेम और पर्यावरण संरक्षण की भावना सहज रूप से पैदा करता है।
- **मूल्य-आधारित और मानवीय शिक्षा:** केवल तकनीकी और व्यावसायिक दक्षता प्राप्त करना ही शिक्षा का अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकता। आज जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तेजी से फैल रही है, तब टैगोर की शिक्षा पद्धति छात्रों में दया, करुणा, नैतिक मूल्य, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करती है।
- **समावेशी एवं समग्र शिक्षा (Holistic Education):** टैगोर का दृष्टिकोण एकांगी न होकर सर्वांगीण विकास पर आधारित था। 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली को भी केवल परीक्षाओं में अंक लाने के बजाय छात्र के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और मनोरचनात्मक (psychomotor) पहलुओं के संतुलित विकास पर ध्यान देना आवश्यक है।

4. शिक्षक की बदलती भूमिका और टैगोर का दृष्टिकोण

21वीं सदी की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका एक पारंपरिक सत्तावादी गुरु की न होकर एक 'सुगमकर्ता' (Facilitator) और मार्गदर्शक की बन गई है। टैगोर ने दशकों पूर्व इसी अवधारणा को प्रतिपादित किया था। उनका मानना था कि एक सच्चा शिक्षक वह नहीं है जो केवल जानकारी या तथ्य बालकों के दिमाग में उंडेलता है, बल्कि वह है जो बालक की सोई हुई चेतना और जिज्ञासा को जगाता है।

टैगोर के अनुसार, शिक्षक को बच्चों के साथ प्रेम, सहानुभूति और मित्रवत व्यवहार करना चाहिए। आज के डिजिटल युग में जहाँ ज्ञान इंटरनेट पर आसानी से उपलब्ध है, वहाँ शिक्षक का मुख्य कार्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि छात्र में सही-गलत का विवेक, नैतिक निर्णय क्षमता और आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking) विकसित करना है। इस संदर्भ में टैगोर का शिक्षक-संबंधी दृष्टिकोण आज भी अत्यधिक व्यावहारिक है।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

निष्कर्षतः, 21वीं सदी की जटिल, बहुआयामी और तीव्र चुनौतियों का सामना करने के लिए रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक, जीवन-उन्मुख और व्यावहारिक हैं जितने उनके समय में थे। आधुनिक तकनीक, डिजिटल क्रांति और भौतिक प्रगति के साथ-साथ यदि हम टैगोर के मानवीय, प्राकृतिक, स्वतंत्रता-आधारित और रचनात्मक दृष्टिकोण को शिक्षा में सम्मिलित करें, तो एक संतुलित, संवेदनशील, चरित्रवान और प्रबुद्ध समाज का निर्माण किया जा सकता है।

आज का दौर जहाँ केवल व्यावसायिक सफलता, पैकेज और तकनीकी दक्षता को ही योग्यता का एकमात्र पैमाना मानने लगा है, वहीं टैगोर का शैक्षणिक दर्शन हमें याद दिलाता है कि शिक्षा का असली उद्देश्य केवल मशीनी ज्ञान देना नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, आत्म-सचेत और परिपूर्ण मनुष्य का निर्माण करना है। डिजिटल लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस युग में मानवीय मूल्यों, सहानुभूति, कलात्मक बोध और प्रकृति से जुड़ाव बनाए रखना अति आवश्यक है, जो केवल टैगोरवादी दृष्टिकोण अपनाकर ही संभव हो सकता है।

अतः यह आवश्यक है कि आधुनिक शिक्षा नीतियाँ- जैसे भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) - टैगोर के शाश्वत विचारों को केवल कागज़ों और भाषणों तक सीमित न रखें, बल्कि उन्हें प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा की व्यावहारिक कक्षाओं में प्रभावी ढंग से लागू करें। जब तक शिक्षा में कला, प्रकृति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सार्वभौमिक बंधुत्व का सामंजस्य बना रहेगा, तब तक टैगोर के विचार संपूर्ण मानव समाज के लिए एक उज्ज्वल पथ-प्रदर्शन का कार्य करते रहेंगे।

6. ग्रंथ सूची / संदर्भ ग्रंथ (References / Bibliography)

1. टैगोर, रवींद्रनाथ (1917). माय स्कूल (My School). शांतिनिकेतनः विश्व-भारती प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 12-45.

2. मुखर्जी, एच. बी. (1962). एजुकेशन फॉर फुलनेसः द एजुकेशनल थॉट ऑफ टैगोर. मुंबईः एशिया पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ

संख्या 88-112.

3. शिक्षा मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020). नई दिल्ली: भारत सरकार, पृष्ठ संख्या 15-32.

4. सत्पथी, बी. (2018). टैगोर का शैक्षिक दर्शन और आधुनिक भारत. दिल्ली: के. पी. पब्लिकेशंस, पृष्ठ संख्या 45-67.

5. गुप्ता, आर. के. (2021). 21वीं सदी में शांतिनिकेतन मॉडल की प्रासंगिकता. भारतीय शिक्षा पत्रिका, अंक 4(2), पृष्ठ संख्या 102-115.

6. सेन, अमर्त्य (2005). द आर्गुमेंटेटिव इंडियन (रवींद्रनाथ टैगोर पर अध्याय). लंदन: पेंगुइन बुक्स, पृष्ठ संख्या 89-110.